Cambridge IGCSE

Cambridge International Examinations
Cambridge International General Certificate of Secondary Education

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/02**

Paper 2 Listening **For Examination from 2019**

SPECIMEN TRANSCRIPT

Approx. 35–45 minutes

CAMBRIDGE
International Examinations

© UCLES 2016

R1 Cambridge International Examinations
International General Certificate of Secondary Education in Hindi as a Second Language
Specimen Listening Comprehension for examination from 2019

Turn over now

[Pause 5 seconds]

Track 1

MALE: **अभ्यास 1: प्रश्न 1–6**

प्रश्न 1 से 6 के लिए आप क्रमानुसार कुछ संक्षिप्त संवाद सुनेंगे। उनके आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नीचे दी गई रेखा पर लिखिए। आपके उत्तर जहाँ तक हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।

आपको प्रत्येक संवाद दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: **संवाद 1**

MALE: ***भारतीय खेल-कूद महासंघ के उपाध्यक्ष, सुनील चोपड़ा ने कहा कि महासंघ सत्रह वर्ष से कम उम्र के खिलाड़ियों वाली बहु-खेल-कूद प्रतियोगिता को कामयाब बनाने के लिए काफ़ी संज़ीदा है| चोपड़ा ने कहा कि 2020 में होने वाली इस प्रतियोगिता के लिए खेल-कूद अधिकारियों ने 3 करोड़ 80 लाख रुपयों का बजट रखा है| भारतीय राज्य गोआ ने इसकी मेज़बानी करने की इच्छा जताई है|****

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 5 seconds]

FEMALE: **संवाद 2**

पुरुषः *नमस्ते बहन जी! कहाँ जाना है आपको?

महिला: जी, पुष्कर जाना है। दो टिकट दे दीजिए।

पुरुषः ज़रूर। वातानुकूलित बस से जाना चाहेंगी या साधारण बस से?

महिलाः गर्मी बहुत है। वातानुकूलित ही अच्छी रहेगी।

पुरुषः ठीक है। बारह सौ पचास रुपए लगेंगे।

महिलाः यह लीजिए। बस कहाँ लगी है?

पुरुषः 11 नंबर पर। वहाँ, अगली कतार के पीछे।**

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 5 seconds]

© UCLES 2016

FEMALE: संवाद 3

MALE: *यात्री कृपया ध्यान दें। नई दिल्ली से हावड़ा जाने वाली राजधानी एक्सप्रेस प्लेटफ़ॉर्म एक से रवाना हो रही है। लखनऊ से आने वाली शताब्दी एक्सप्रेस तकनीकी गड़बड़ी के कारण आधे घंटे के विलंब से चल रही है। पुणे से आने वाली जम्मू तवी एक्सप्रेस अब प्लेटफ़ॉर्म दस पर आ रही है। जयपुर से होकर अजमेर जाने वाली पिंक सिटी एक्सप्रेस अपने निर्धारित समय पर प्लेटफ़ॉर्म चार से रवाना होगी।**

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 5 seconds]

FEMALE: संवाद 4

पुरुषः *नमस्कार। मराठा मंदिर। कहिए क्या सेवा करूँ?

महिलाः नमस्कार। क्या आज रात के शो के टिकट मिल सकते हैं?

पुरुषः प्रथम श्रेणी और बालकनी के कुछ टिकट बचे हैं। कितने चाहिएँ आपको?

महिलाः प्रथम श्रेणी के दो। दाहिने कोने की सीटें दे सकें तो अच्छा होगा।

पुरुषः दाहिने और बाएँ कोने की सीटें तो भर चुकी हैं। बीच के गलियारे की सीटें बुक कर सकता हूँ।

महिलाः जी, कर दीजिए। धन्यवाद।**

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 5 seconds]

FEMALE: संवाद 5

MALE: *साहित्य प्रेमियों के लिए एक शुभ सूचना। हिंदी कथाकार भीष्म साहनी की जन्मशती के अवसर पर आज उनकी रचनाएँ आधे दामों पर बेची जा रही हैं। यदि आप उनकी रचनाएँ ख़रीदना चाहते हैं तो पुस्तक मेले के केंद्रीय हॉल में लगे भीष्म साहनी पंडाल में पधारें जहाँ आप उनकी रचनाओं के साथ-साथ उन पर बनी फ़िल्में और टेलीविज़न धारावाहिक भी आधे दामों पर ख़रीद सकते हैं।**

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 5 seconds]

FEMALE: संवाद 6

पुरुषः *हैलो सपना, तुम यहाँ कैसे?

महिलाः क्यों संजीव, क्या मेरा काम पर आना मना है?

पुरुषः मज़ाक छोड़ो! क्या तुम्हें आज रश्मि के घर नहीं होना चाहिए?

© UCLES 2016

महिलाः अरे बाप रे! आज तो उसका जन्म दिन है! अब क्या करूँ?

पुरुषः कुछ ख़ास नहीं। बस टिकट कटा कर किसी दूसरे देश चली जाओ!

महिलाः तुम्हें तो हर वक़्त मज़ाक करने की सूझती है?

पुरुषः नहीं, मैं तो इसलिए कह रहा था कि तुम्हें इतना भी याद नहीं है कि वह शादी की सालगिरह मना रही है, जन्मदिन नहीं।**

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 5 seconds]

MALE: यह अभ्यास 1 का अंतिम संवाद था। थोड़ी देर में आप अभ्यास 2 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 2 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

<u>Track 2</u>

FEMALE: अभ्यास 2: संवाद 7

जाने-माने फ़िल्म समालोचक और पत्रकार दिनेश पंडित पिछले दिनों लेह-लद्दाख की यात्रा से लौटे हैं। लेह से नदारद सिनेमा पर उनके एक संस्मरण को ध्यान से सुनिए और नीचे छोड़े गए खाली स्थानों (a–h) को भरिए।

यह संस्मरण आपको दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: *नमस्कार। मैं हूँ दिनेश पंडित। पिछले दिनों एक नई फ़िल्म की शूटिंग के सिलसिले में कश्मीरी शहर लेह जाने का मौक़ा मिला। लद्दाख क्षेत्र की राजधानी लेह की ख़ूबसूरती को हिंदी की कई फ़िल्मों में उतारा गया है। मशहूर फ़िल्म 'थ्री इडियट्स' की शूटिंग यहां के ड्रुक वाइट लोटस स्कूल में हुई थी, जिसे अब रैंचो स्कूल के नाम से जाना जाता है। पैन्गोंग झील को पूरे देश में लोकप्रिय बनाने का श्रेय भी इसी फ़िल्म को जाता है।

लेकिन अगर आप इन फ़िल्मों को लेह में देखना चाहें तो निराशा ही हाथ लगेगी, क्योंकि लेह में कोई सिनेमा हॉल नहीं है। लेह का एकमात्र सिनेमा हॉल दर्शकों की कमी के कारण वर्षों पहले बंद हो गया था। लेकिन जिन दिनों यह चलता था तब भी यहाँ नई फिल्में कभी नहीं लगती थीं। पुरानी फिल्मों को देखने जाने वालों में ज़्यादातर वे मज़दूर होते थे जो रोज़ी-रोटी की तलाश में दूसरे राज्यों से वहाँ आते थे। ऐसे में यहाँ फ़िल्म देखने की कोई संस्कृति विकसित नहीं हो पाई और यहाँ की एक पूरी पीढ़ी सिनेमा हॉल में फ़िल्म देखे बिना ही बड़ी हो गई।

मगर अब लेह पर भी फ़िल्मी रंग चढ़ने लगा है। फ़िल्मों के शौकीन और पत्रकारिता एवं जनसंचार के पूर्व प्रोफ़ेसर, ज़िलाधिकारी सौगत बिस्वास ने एक अभिनव शुरुआत की है और लेह के कभी-कभार प्रयोग में आने वाले एक पुराने सभागार को छोटे सिनेमा हॉल में बदल दिया है। इसमें शहर के सभी सरकारी और निजी स्कूलों के बच्चों को हर शनिवार हिंदी और अंग्रेज़ी की फिल्में और वृत्तचित्र सिनेमा हॉल के अनुभव के साथ मुफ़्त में दिखाए जाते हैं।

© UCLES 2016

लेह-लद्दाख की अनूठी संस्कृति पर कई शानदार फ़िल्में बनी हैं। पर यहाँ के लोग उनके बारे में जानते भी नहीं थे। दसवीं की एक छात्रा सोनम ने बताया कि सिनेमा कैसा होता है, यह उसे पहली बार पता चला। एक अन्य छात्रा ज़ीनत को उम्मीद है कि ज़िलाधिकारी सौगत बिस्वास के प्रयासों से एक दिन लेह में मल्टीप्लैक्स भी खुल जाएगा। इसलिए लेह के बच्चे उन्हें 'फिल्म वाले अंकल' कह कर बुलाने लगे हैं।**

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 2 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 2 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 3 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 3 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

<u>**Track 3**</u>

MALE: अभ्यास 3

खेलों में फैलते भ्रष्टाचार की समस्या पर पत्रकार और लेखिका विमला घोष के विचारों को ध्यान से सुनिए और दिए गए प्रत्येक कथन में रेखांकित की गई ग़लती को सही शब्दों या वाक्यांश का प्रयोग करते हुए ठीक कीजिए।

ये विचार आपको दो बार सुनाए जाएँगे।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: *बीसवीं सदी में देखने का खेल फुटबॉल होता था, अगर आपको मैच का टिकट मिल जाये, और सुनने का खेल क्रिकेट होता था, अगर आपके पास रेडियो हो। भारत में हॉकी के खेल के रूप में एक तीसरा खेल भी लोकप्रिय हुआ था। सस्ता और आसान होने के कारण यह गाँव-गाँव में खेला जाता था। किंतु कुछ समय के गौरव के बाद पता नहीं क्यों यह खेल हाशिये पर चला गया।

क्रिकेट की तुलना में फुटबॉल तेज़ रफ़्तार का खेल था। यह कम समय में खेला जाता है। आर्कटिक की ठंड और रेगिस्तानी गरमी के अलावा उसे मौसम से कोई दिक्कत नहीं थी। क्रिकेट का खेल एक उबाऊ उपन्यास की तरह था, जो कभी ख़त्म ही नहीं होता था। साथ ही वह इतना अनिश्चित था कि हल्की सी बारिश भी उसे रोक सकती थी।

पुराने दिनों में एक क्रिकट टेस्ट मैच हफ्ते भर चलता था। तब क्रिकेटदेखना और इस का आनंद उठाने के लिए समय निकाल पाना नौकरीपेशा लोगों के बूते की बात नहीं था। भले ही ढीले नियमों वाली सरकारी नौकरी ही क्यों न हो। जिन्हें अपनी नौकरी या पेशे में ऊपर जाने की धुन थी, उनके लिए तो इसकी सिफारिश नहीं की जा सकती थी। इसके अधिकांश दर्शक वे युवा थे, जिनकी उम्र अभी नौकरी की नहीं हुई थी। वे सेवानिवृत और उच्च वर्ग के इस उबाऊ खेल का एक रोचक विलोम प्रस्तुत करते थे।

कुछ लोग मानते हैं कि क्रिकेट और फुटबॉल के प्रशंसक परंपरागत रूप से सामाजिक-अर्थिक आधारों पर बंटे हुए होते हैं। लेकिन यह कहना पूरी तरह सही नहीं है। फुटबॉल खेलने के लिए बहुत चीज़ों की

जरूरत नहीं है। गेंद लगन और क्षमता ही काफी है। इसलिए फुटबॉल विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों और समुदायों का प्रतिनिधित्व कर पाया है।
खेलों के जनाधार में पहली गंभीर बढ़ोतरी साठ के दशक में रेडियो के आने के साथ हुई। लेकिन खेलों में पैसे का प्रवेश टेलीविज़न क्रांति के साथ हुआ। जब से बहुत धन आया है, फुटबॉल और क्रिकेट दोनों ही भ्रष्टाचार की बीमारी से ग्रस्त हो गएँ हैं। खिलाड़ियों का पेशेवर जीवन भी छोटा होने लगा है और उनमें से अधिकतर खिलाड़ियों को तब कुछ नहीं सूझता, जब पलक झपकते ही उनका करियर समाप्त हो जाता है। टीम के हर दो नायकों की तुलना में बाकी के नौ बहुत जल्दी भुला दिये जाते हैं और बाहर बेंच पर बैठे दो दर्जन खिलाड़ियों को तो कोई याद भी नहीं रखता। इसलिए जल्दी से जल्दी पैसा कमा कर भविष्य सुरक्षित कर लेने की होड़ में बड़े-बड़े खिलाड़ी और टीमें भ्रष्टाचार के दलदल में फँसती देखी गई हैं।

क्रिकेट और फुटबॉल की दुनिया में नीचे से लेकर सर्वोच्च स्तरों तक भ्रष्टाचार के अनेक मामलों की छानबीन चल रही है। लेकिन संभावना यह है कि सामने आये हर ऐसे मामले की तुलना में दस और मामले ऐसे होंगे, जो पकड़ में नहीं आ सके। क्रिकेट के सबसे शक्तिशाली नाम सटोरियों से जुड़े पाए गए हैं। फुटबॉल में भी भ्रष्टाचार की दीमक नीचे से लेकर ऊपर तक फैल चुकी है।**

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 3 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 3 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 4 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 4 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

__Track 4__

FEMALE: **अभ्यास 4**

नीना वर्मा के साथ प्रो सिंह के रेडियो वार्तालाप को ध्यान से सुनिए और निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए A, B अथवा C में से किसी एक विकल्प को सही| [✓] का निशान लगा कर चुनें।

यह वार्तालाप आपको दो बार सुनाया जाएगा|

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

प्रो. सिंहः *अपनी हाल की बांग्लादेश की यात्रा के बारे में बातचीत करने के लिए धन्यवाद| आपकी यात्रा कैसी रही?

नीनाः मेरी यात्रा सुखद रही| वैसे तो मैं अपनी कंपनी के कार्य से गई थी। लेकिन मुझे बांग्लादेश में एक परिवार का अतिथि बन कर रहने का भी सौभाग्य मिला| होटल में रहने की अपेक्षा परिवार के साथ रहने से मुझे बांग्लादेश के लोगों की खातिरदारी का अनुभव और उनके साथ विभिन्न भाषाएं बोलने की उपयोगिता के विषय में विचार विमर्श करने का अवसर मिला।

प्रो. सिंहः क्या बांग्लादेश के लोग हिंदी में भी कोई रुचि रखते हैं?

नीनाः जी हाँ, उनकी रोज़मर्रा की बातचीत से हिंदी के प्रति उनका लगाव ज़ाहिर था| उन्हें भेंट के रूप में देने के लिए मैं बॉलीवुड की कुछ फिल्में ले गई थी जिसे पाकर वे अत्यंत प्रसन्न हुए|

प्रो. सिंहः आपको परिवार के साथ रहकर कैसा लगा?

नीनाः मैं परिवार के बच्चों के साथ बहुत हिलमिल गई थी| उन बच्चों के साथ मुझे बंगाली भाषा में बात करने का मौका मिला जबकि वे लोग मुझसे हिंदी में बात करने के लिए उत्सुक रहते थे| जैसा कि आप जानते हैं, बंगला भाषा बांग्लादेश के साथ-साथ भारत में पश्चिम बंगाल की भी मातृभाषा है| दोनों देशों की बंगला भाषा के व्याकरण, और लिपि एक समान हैं मुख्य अंतर शब्दावली, उच्चारण और ध्वनि का है| मैं शीघ्र ही उनके उच्चारण की अभ्यस्त हो गई| वहां मुझे इस बात का अनुभव हुआ कि लोगों से जुड़ने के लिए भाषा का कितना महत्व है| परिवार के सदस्य मुझे आसपास के दर्शनीय स्थान दिखाने ले गये| सुंदरबन घूमने और प्रसिद्ध बंगाल-बाघ को अपनी आंखों से देखने का अनुभव मुझे हमेशा याद रहेगा|

प्रो. सिंह: बांग्लादेश और भारत के बीच घनिष्ठता के क्या कारण हैं?

नीनाः भौगोलिक रूप में बांग्लादेश तीन ओर) से भारत से घिरा हुआ है और ऐतिहासिक रूप से दोनों देशों की संस्कृति, साहित्य, खान-पान, सभ्यता और जीवन दर्शन में साम्य है| सबसे बड़ी बात यह है कि इन पड़ौसी देशों में परस्पर सौहार्द और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कारण निकटता है|

प्रो. सिंहः यह सांस्कृतिक सम्बन्ध समाज में किस रूप में झलकता है?

नीना: इसका एक अच्छा उदाहरण बांग्लादेश और पश्चिम बंगाल की पाक-प्रणाली है| दोनों क्षेत्रों का मुख्य आहार दाल-भात, रोटी और शाक है| अधिकांश जन मांसाहारी हैं और चूज़े, बकरी के गोश्त आदि के शौकीन भी, पर उनका सबसे प्रिय खाद्य विभिन्न प्रकार की मछलियों से बने व्यंजन हैं जिन्हें वे सरसों के तेल में पिसी हुई अदरक, लहसुन, प्याज़. हरी मिर्च और टमाटर भूनकर पकाते हैं|

प्रो. सिंह: उनके दैनिक जीवन में हिंदी का क्या प्रभाव है?

नीना: दैनिक जीवन में बोलचाल की भाषा में हिंदी के प्रयोग और हिंदी सिनेमा और गानों के प्रति उनका लगाव ज़ाहिर हैं| किसी भी धार्मिक या सामाजिक अनुष्ठान में हिंदी गाने अवश्य सुनाई देंगे|

प्रो. सिंहः यह प्रभाव दैनिक जीवन तक ही सीमित है या विद्यालयों में हिंदी भाषा की शिक्षा पर भी इसका असर है?

नीना: दुर्भाग्यवश हिंदी भाषा की सुनियोजित शिक्षा के क्षेत्र में बहुत संतोषजनक प्रगति नहीं हुई है| कुछ प्राथमिक विद्यालयों के पाठ्यक्रम में हिंदी की पढ़ाई की व्यवस्था है| किंतु सप्ताह में केवल आधे घंटे के लिए हिंदी की शिक्षा का समय नियत करके प्रगति की आशा करना अनुचित होगा| कुछ वर्षों पहले ढाका विश्वविद्यालय में भी हिंदी शिक्षा का पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया था| बहुत सारे छात्रों ने इसमें अपने नाम दर्ज कराए, भारत और बांग्लादेश के सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अंतर्गत हिंदी के शिक्षक भी भारत से आए| लेकिन कोर्स की फ़ीस न भर पाने के कारण छात्रों की संख्या धीरे-धीरे कम हो गई|

प्रो सिंह: क्या हिंदी को : लोकप्रिय बनाने की और भी कोई गतिविधियां हैं?

नीनाः अवश्य| कुछ निजी एवं स्वयंसेवी संस्थाएं इस दिशा में प्रयास करती हैं। लेकिन प्रभावशाली नेतृत्व को आकर्षित न कर पाने के फलस्वरूप ऐसे प्रयास बहुत दिनों तक टिक नहीं पाते हैं| स्वयंसेवी संस्थाओं को सफल बनाने के लिए सबसे अधिक किसी ऐसे सशक्त नेता की आवश्यकता होती है जो निस्वार्थ भाव, लगन और प्रतिबद्धता से संस्था की सफलता के लिए अपना समय लगा सके| उसके अभाव में केवल कुछ इक्के-दुक्के प्रयास किसी उल्लेखनीय प्रगति के लिए काफ़ी नही है|

प्रो सिंहः नीना जी आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।**

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 4 के ये विचार अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 1 minute]

MALE: अभ्यास 4 और यह परीक्षा समाप्त हुई।

FEMALE: This is the end of the examination.

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of the University of Cambridge.

© UCLES 2016